International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

# मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श एवं चेतना के स्वर

**[1]Reena Dayal & [2]Pooja Verma**

[1]Research Scholar, Dept. of Hindi, Himalayan University, Arunachal Pradesh, India

[2]Dept. of Hindi, Himalayan University, Arunachal Pradesh, India

**सार**

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के मूल में पुरूष प्रधान मूल्यों वाले पारंपरिक समाज में व्यक्तित्व तो दूर अस्तित्व से भी वंचित स्त्री की करूण स्थिति है और इसी के बीच से उभरती स्त्री के संकल्पों की दृढ़ता भी है। हिंदी साहित्य जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाली ,स्त्रियों के दुःख पीड़ा एवं सामाजिक स्थिति को अपनी लेखनी से उकेरने में महारथ हासिल मैत्रेयी का जन्म 30 नवंबर सन् 1944 को अलीगढ़ के सीकरी गांव में हुआ था। उन्होंने कॉलेज के दिनों से ही लिखना प्रारंभ किया इनकी पहली कविता बाड़े में काम करने वाली महिलाओं पर थी जिसके कारण इन्हें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा वह जिस बाड़ें में रहकर पढ़ती थी अखबार में कविता के छपने के बाद उस बाड़े में रहने वाले लोग उस कविता को पढ़कर उत्तेजित हो गये और इन्हें अपना कमरा खाली करना पड़ा। इनका कविता संग्रह 'खुली खिड़कियां' तथा 'लकीरें' साहित्य के क्षेत्र में एक नया आयाम लाने की कोशिश है ।अपने काव्य संग्रह 'खुली खिड़कियों' के माध्यम से उन्होंने नारी की वास्तविक स्थिति को उजागर करने का प्रयास किया है।

**परिचय**

हिंदी साहित्य जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाली ,स्त्रियों के दुःख पीड़ा एवं सामाजिक स्थिति को अपनी लेखनी से उकेरने में महारथ हासिल मैत्रेयी का जन्म 30 नवंबर सन् 1944 को अलीगढ़ के सीकरी गांव में हुआ था।[1]

उन्होंने कॉलेज के दिनों से ही लिखना प्रारंभ किया इनकी पहली कविता बाड़े में काम करने वाली महिलाओं पर थी जिसके कारण इन्हें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा वह जिस बाड़ें में रहकर पढ़ती थी अखबार में कविता के छपने के बाद उस बाड़े में रहने वाले लोग उस कविता को पढ़कर उत्तेजित हो गये और इन्हें अपना कमरा खाली करना पड़ा।[2] इनका कविता संग्रह 'खुली खिड़कियां' तथा 'लकीरें' साहित्य के क्षेत्र में एक नया आयाम लाने की कोशिश है ।अपने काव्य संग्रह 'खुली खिड़कियों' के माध्यम से उन्होंने नारी की वास्तविक स्थिति को उजागर करने का प्रयास किया है।मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री जीवन के सत्य को उजागर करने का माध्यम गद्य को बनाया क्योंकि मानव जीवन के यथार्थ चित्रण में कहानी एवं उपन्यासों जैसी क्षमता अन्य किसी साहित्यिक विधा को नही है।[3] इन्होंने अपने जिये हुये परिवेश को सहजता, सरलता , स्वाभाविकता से अत्यंत संतुलित शब्दों में अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है जिसे पढ़कर लगता

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

है कि यह केवल रचनायें नहीं है समाज का दस्तावेज है। मैत्रेयी पुष्पा जी के लगभग दस उपन्यास एवं तीन कहानी संग्रह प्रकाशित है। उनके उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की एक झलक स्पष्ट दिखाई देती है नारी शोषण के प्रति विद्रोह वृद्धों, अशिक्षित विधवा नारियों का चित्रण अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में लेखिका ने अपने विचार, विद्रोह एवं अनुभव के साथ चित्रित किये हैं।विद्रोह से मनुष्य की आजादी संभव होगी ।[4]नारी विद्रोह एक दिन की सृष्टि नहीं है कई वर्षों से शोषित नारी मानसिकता की कालानुसृत परिणति है। मैत्रेयी के कथा संसार की नारी शोषण के प्रति विद्रोह करने के साथ-साथ अपने ऊपर के बंधनों को तोड़ने का प्रयास करने लगी। मैत्रेयी के उपन्यास और कहानियां इसका सच्चा मिसाल है। लेखिका समकालीन परिवेश और समाज में नारी को जो अत्याचार झेलने पड़े उसके विरोध में अपनी आवाज उठाती हैं नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं की भीषणता को अनावृत करने में मैत्रेयी अपने कथा साहित्य द्वारा समर्थ हुयीं हैं।[5]

अपनी पहली कथा 'अपना अपना आकाश' द्वारा लेखिका ने एक वृद्ध ग्रामीण निरक्षर विधवा की निरालंबन की कथा को मार्मिक ढंग से चित्रित किया है' बेटी' 'सहचर' 'बहेलिया' नामक तीन कहानियों में शिक्षा से वंचित होने के कारण शोषण के शिकार बनने वाली नारियों की है। 'मन नहीं दस बीस' में ग्रामीण किसान, नारी शोषण के प्रति विद्रोह आदि का अनुभूतिजन्य चित्रण चंदना, स्वराज वर्मा आदि पात्रों द्वारा लेखिका ने किया है ।[6]आक्षेप में लेखिका ने एक सशक्त नारी पात्र का चित्रण किया है, जो बदनामी की परवाह किये बिना समाज के दुखियों पीड़ितों की मदद के लिये हर समय हाजिर रहती है। 'कृतज्ञ' भी नारी शोषण की कहानी है 'चिह्नार, सरजू की दुःख भरी कहानी है। दिशाहीन पति को स्नेह करने वाली तथा बच्ची अपनी होने पर भी उसकी नौकरानी बनकर जीने वाली सरजू एक शोषित नारी का प्रतीक है। 'सिस्टर' नामक कहानी में डोरोथी डिसूजा नामक नर्स के द्वारा स्त्रियों की कुंठा, निराशा, आत्मनिर्भरता, अकेलापन और वात्सल्य का चित्रण लेखिका ने किया है।[7] 'आज फूल नहीं खिलते' में झरना नामक बच्ची की कहानी है जो गांव से शहर पढ़ने के लिए आती है पर प्रिंसिपल से यौन शोषण भोगना पड़ता है शोषण के विरुद्ध झरना अपनी सारी ताकत लेकर प्रतिक्रिया भी करती है। लेखिका ने अपने हर उपन्यास एवं कहानी में नारी का विद्रोही स्वर मुखरित किया है।'स्मृतिदंश' मैत्रेयी जी का सबसे पहला उपन्यास है।[8] इस उपन्यास के माध्यम से मैत्रेयी ने ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली लड़कियों के वैवाहिक जीवन की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।अपने उपन्यास 'बेतवा बहती रही' में बेतवा नदी के किनारे रहने वाली उर्वशी एक भारतीय ग्रामीण नारी का प्रतीक है जिसके पति की मृत्यु के बाद उसे ना चाहते हुए भी अपने से अधिक उम्र के पुरुष से विवाह करना पड़ता है।[9] उपन्यास 'झूलानट'की नायिका शीलू विद्रोही स्वभाव की है वह गांव की संस्कृति और आचार विचार को चुनौती देती है। इदन्नमम मैत्रेयी जी के व्यक्तित्व की पहचान है इसमें उन्होंने शामली और सोनपुरा नामक दो गांवों में रहने वाली तीन पीढ़ियों की औरतों की संवेदनशीलता को दर्शाया है। 'आंगनपाखी' उपन्यास आचार -विचार,व्यवहार द्वारा भारत की जनता के सभ्यता और संस्कार की सामाजिक स्थिति को दर्शाता है। 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में कबूतरा नामक जनजाति के जीवन संघर्ष की कहानी है 'विजन' उपन्यास में लेखिका ने बताया है कि संघर्ष शोषण केवल ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का नहीं होता, पढ़ी-लिखी शहरी कामकाजी महिलाओं को भी झेलना पड़ता है। पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए अपनी उपस्थिति की पहचान के लिए लड़ना पड़ता है। 'कस्तूरी कुंडल बसै' बेजोड़ उपन्यास है जिसे पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि यह संघर्ष कस्तूरी से ज्यादा स्वयं मैत्रेयी जी का है। 'कही ईसुरी फाग' रचना के पीछे लेखिका का वह लोकानुराग है जो बचपन से उनकी सामाजिक ,पारिवारिक संस्कृति से संबंधित है।[10]

'कस्तूरी कुंडल बसै' की कस्तूरी मैत्रेयी की मां एक जुझारू नारी थी। वह मैत्रेयी की शादी नहीं करना चाहती थी ,क्योंकि उन्हें लगता था कि किसी तरह अपनी बेटी का बोझ किसी पुरुष के कंधे पर डालना परिवार वालों का लक्ष्य होता है। लड़की को परिवार का शाप समझा जाता है मां का मानना है कि 'संसार में औरतों के मुकाबले कोई सख्त जान नहीं बेटो को रोग-धोग व्यापे पर इसे कभी छींक तक नहीं आयी। अरे गाय मरे अभागे की बेटी मरे सुभागे की, मगर बेटी मरे तो सही।'गांव में विधवा स्त्री का जीवन नर्क से भी ज्यादा खराब होता है[11] परंतु मैत्रेयी की नारी पात्र इस जीवन का विरोध करते हुए अपना जीवन जीती हैं 'चाक' की नायिका रेशम का पति कर्मवीर की मृत्यु के छःमहीने बाद वह गर्भवती हो गयी। सास के बार-बार पूछने पर भी वह किसी का नाम बताने को तैयार नहीं थी बिना बाप के बच्चे का पालन करने का साहस उसमें था ।गर्भवती रेशम के सामने ससुराल वालों ने एक सुझाव रखा देवर डोरिया को पति के रूप में स्वीकार कर लो लेकिन रेशम आत्मावंचना के लिए तैयार नहीं थी उसने विद्रोही स्वर में नारी से संबंधित एक सच्चाई सास से पूछी 'तुम्हारे पूत की चिता ठंडी हो जाने से क्या मेरी देह की आग बुझ जाती? बिना बाप के बालक को भगवान पाप मानता तो हमारी विधवा की कोख में डालता।'[12]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

मैत्रेयी के नारी पात्र का मानना है कि पतिव्रता होने पर भी नारी शोषण से मुक्त नहीं होती। 'चाक' में सारंग ने अपनी इच्छा से अपना शरीर श्रीधर को सौंप दिया उसके मन में इसके लिए लेश मात्र भी अपराध बोध नहीं था। सारंग ने नारियों के प्रति समाज की विद्रूप एवं घोर नीतियों के प्रति विद्रोह का स्वर मुखरित किया है ग्रामीण समाज में रहने वाली जाट परिवार की कुलवधू सारंग ने पुरुषसत्तात्मक समाज का सशक्त रूप से विरोध करते हुये अपने पति के समक्ष बंदूक उठा लेने वाली सशक्त और हिम्मती पात्र है।विधवा बहू कुसुम के चरित्र में लेखिका ने विद्रोह लाने की कोशिश की है विधवा होने पर भी उसने दूसरी जिंदगी न स्वीकार करके अपने बेटे की देखभाल की जिम्मेदारी अकेली निभायी। बेटे की हत्या के बाद बहू अपनी बच्ची मंदा को छोड़कर चली गयी चलते समय मंदा को उसने ले लिया मंदा को सुरक्षा के लिए उसे लेकर शामली, समथर ,ओरछा, बिरगांव जाना पड़ा सोनपुर का सारा जायदाद छल से नष्ट होने पर भी उसने अपना साहस न छोड़ा ।[13] कुसुम एक विद्रोही नारी है अपने पति यशपाल द्वारा उपेक्षित होने पर भी वह ससुराल में रहती थी। वहां के तपेदिक के रोगी अमर सिंह के साथ उसका संबंध हुआ और एक बच्चा भी हुआ बच्चे के जन्म से पहले अमर सिंह मर गया। मंदा को मंदा बनाने में कुसुम की लगातार कोशिश की जीत हुयी। बिरगांव में जब कैलाश मास्टर ने मंदा का बलात्कार किया तब कुसुम ने मार मार कर कैलाश मास्टर की हड्डियां तोड़ डाली और मंदा को धीरज बंधाकर शामली ले गयी। ,सगुना पर मंदा का प्रभाव जरूर पड़ा जब वह समझ गयीं कि अभिलाख के बलात्कार से वह गर्भवती बन गयीं हैं तब अभिलाख की हत्या करने की बहादुरी दिखायी ।[14]

'आंगनपाखी' में मैत्रेयी ने भुवन का परिचय विद्रोहिणी के रूप में कराया है उसकी जिंदगी शोषण से भरपूर थी। वह पढ़ना चाहती थी लेकिन घर वाले उसे कक्षा पांच से आगे पढ़ने नहीं देते हैं और उसको घर से लेकर खेतों के काम में लगा देते हैं उसकी शादी एक बहुत ही पैसे वाले परिवार के पागल पुत्र विजय सिंह के साथ होती है वह उस पागल से तलाक लेना चाहती है पर अम्मा उसे लोक लाज मर्यादा सिखाती हैं वह अपनी अम्मा से पूछती है 'अम्मा ब्याह करना पाप नहीं है तो ब्याह छोड़ना क्यों पाप है '? वह ससुराल के आचार,[15] मर्यादा ,पर्दा प्रथा आदि को दरकिनार कर मंदिर में पूजा करने जाती थी पति को बीमारी से मुक्ति दिलाने के लिए तंत्र विद्या सीखने लगती है विजय की मृत्यु पर सती अनुष्ठान से बचने के लिए वह मंदिर के पुजारी की मदद से वन में चली जाती है। लेखिका ने उसको जुझारू संघर्षशील एवं विद्रोही नारी के रूप में चित्रित किया है।'कही ईसुरी फाग' की मीरा एक सशक्त आधुनिक नारी पात्र का प्रतीक है उसकी मदद से ऋतु अपने शोध का मटेरियल इकट्ठा करती है। मीरा गांव वाली होते हुये भी एक साधारण सी लड़की की तरह घुंघट डालकर रसोई में नहीं बैठी, उसकी शादी पंद्रह सोलह साल की उम्र में हुयी जब वह आठवीं पास थी बाद में उसने किसी तरह हायर सेकेंडरी पास कर लिया दो बच्चे भी हुए, उसने दिन में घर का सारा काम किया एवं रात में अपनी पढ़ाई ,इस तरह उसने बी.ए पास कर लिया और गांव की अनपढ़ नारियों को पढ़ाना शुरू किया। पूरे समाज का विद्रोह कर आंगनबाड़ी में काम करने लगी मीरा से प्रेरणा पाकर ऋतु ने भी अपना थीसिस पूरा कर लिया था।'फैसला' कहानी की ईसुरिया गड़ेरिया की पत्नी है, दलित हैं फिर भी वह प्रधानिन वसुमति से ज्यादा साहस दिखाती है[16] जब वसुमति प्रधान पद पर चुनाव जीत गयी तभी ईसुरिया ने कहा 'बराबरी का जमाना आ गया अब ठठरी बांधे मरद मारा कुटी करें, गाली गलौज दे, मायके ना भेजें, पीहर से रुपैया पैसा मंगवाए ,क्या कहते हैं कि दायजे के पीछे सतावे, तो बस बैन सूधी चली जाना बासुमति के डींगे।' ईसूरिया का चित्रण लेखिका ने अलग ढंग से किया है उसके आगे कोई भी हो वह गलत बोलता तो वह ज़वाब जरूर देती ,उसके मन में किसी के प्रति भय नहीं है और वह किसी की गुलाम भी नहीं है। वह घूंघट नहीं डालती गांव के गरीबों की समस्यायें सुलझाती है।हरदेई और रामकिशुन की समस्या के समाधान के लिए वह प्रयत्न करती थी लेकिन असफल हो गयी।[17] ईसुरिया से प्रेरणा पाकर बासुमति ने अपने पति रणवीर को वोट नहीं दिया और एक वोट की कमी के कारण प्रमुख के चुनाव में रणवीर हार गया।

'इदन्नमम' की मंदा एक बहुत ही ईमानदार ,साहसी और विद्रोही पात्र है। क्रेशर ब्लास्टिंग के कारण गांव वालों की खेती बर्बाद होती हैं और लोग चैन से नहीं रह पाते इसलिए सभी मिलकर यह फैसला करते हैं कि मंदा के नेतृत्व में क्रेशर मालिकों के विरुद्ध आंदोलन चलाया जाएगा। मंदा और द्वारिका काका जब अभिलाख से मिलने जाते हैं तो क्रेशर मालिक अभिलाख और मंदा में वाक् युद्ध होता है तथा अभिलाष क्रुद्ध होकर मंदा पर हमला कर देता है। 'अभिलाष ने आव देखा न ताव लपक कर मंदाकिनी के बाल झझोड़ डाला। साली, हरामजादी कहकर गालियां दी ,बांह पकड़कर ऐठ डाली और जहां जहां हाथ गया वहां ठौर देखा न कुठौर, टूट पड़ा भूखे भेड़िए की तरह' इस घटना के पश्चात राउत वर्ग ने अभिलाख के घर पर हमला बोला और मामला पुलिस तक गया। समाज की विडंबना एवं पुरुष सत्तात्मक स्थिति के कारण मंदा को थाने की पुलिस दरोगा और थानेदारों से अपमान सहना पड़ा, मगर मंदा ने हिम्मत नही हारी न पीछे हटी क्रेशर मालिकों के खिलाफ गांव में जागरण फैलाती रही तथा आंदोलन करती रही।'अल्मा कबूतरी' में भूरी कबूतरी सबसे विद्रोही नारी पात्र है इस उपन्यास की प्रतिनिधि पात्र कदमबाई है[18] जिसके मनमोहक और सुंदर शरीर के लोभवश कज्जे लोग उसके पति जंगलिया को मार काट के मामले में फंसा कर उसकी हत्या करवा देते हैं। कबूतरियों के शारीरिक शोषण तथा

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

शराब पीने के लिए कज्जे पुरुष उनकी बस्ती में आते जाते थे। अंधेरे में पति की प्रतीक्षा में खेत पर खड़ी कदमबाई के साथ मंसाराम शारीरिक संबंध स्थापित करता है और वह गर्भवती हो जाती है अपने बेटे को बड़ा करने एवं पढ़ाने लिखाने में उसे बहुत शोषण सहना पड़ता है।'विजन' उपन्यास में दो नेत्र चिकित्सक महिला डॉक्टर आभा और नेहा की कहानी है आभा विद्रोही पात्र है डॉ नेहा अजय की पत्नी होने के साथ साथ शरण आई सेंटर की डॉक्टर तथा डॉक्टर शरण की बहू का कर्तव्य निभाते निभाते थक गयी हैं उनकी अपनी कोई पहचान नहीं रह गई है परंतु उसके भीतर अपने शोषण के प्रति विद्रोह करने की ताकत नहीं थी, इसलिए डॉक्टर नेहा ने डॉक्टर आभा से मदद मांगी।आभा नें अपनी डॉक्टरी के पेशे में बाधा बनने वाले वैवाहिक जीवन को छोड़ने की हिम्मत दिखायी नेत्र चिकित्सा में कुशल डॉ आभा ने अपने पति और ससुराल वालों के व्यर्थ की जिद्द को स्वीकार नहीं किया इसलिए उसने अपने पति को तलाक दे दिया। आभा, नेहा की जिंदगी की मार्गदर्शक है।[19]

अपने उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से लेखिका सिर्फ पढ़ी-लिखी नायिकाओं द्वारा ही नही अनपढ़, ग्रामीण, नारी पात्र द्वारा भी शोषण के प्रति विद्रोह प्रकट करती है। विद्रोह प्रकट करने में' पगला गयी है भागवती' में भागो ने एक अलग रास्ता चुन लिया। जिज्जी की बेटी अनसूया पहले ही मां से उपेक्षित लड़की थी उसका संरक्षण भागो ने किया था, अनसूया के भाई ने अपनी मर्जी के अनुसार रजिस्टर्ड विवाह किया और मां-बाप ने उन्हें बुलाकर धूमधाम से ब्याह कराया। उस समय आशीष देने के लिए माधव सिंह के मंच पर आते वक्त भागो ने पत्थर उठाकर मारा ,सब सोचने लगे भागो पागल हो गयी है पर उसने अपना विद्रोह प्रकट करने के लिये पत्थर फेंका था।मैत्रेयी पुष्पा अपने कथा साहित्य में भारतीय समाज की नारी को अपने अस्तित्व की लड़ायी के लिए प्रेरित करते हुये उनकी सुसुप्त चेतना को जागृत करने में सक्षम दिखाई देती है। पुरुष सत्तात्मक समाज में गुलामी की जंजीर को तोड़ने के लिये नारी को समाज में व्याप्त रूढ़ियों, परंपरागत अनाचारों, का उल्लंघन करने का साहस दिखाना पड़ेगा, सदियों से चली आ रही परंपरा और रीति-रिवाज को तोड़ती हुई समाज में अपने साथ होने वाले शोषण के प्रति विद्रोहात्मक स्वर को बुलंद करने वाली नारी को लेखिका ने अपनी कथा साहित्य में अलग व्यक्तित्व प्रदान किया । मैत्रेयी पुष्पा ने नारी समाज को अपने साथ होने वाले हर शोषण के विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रेरित किया है अपनी आत्मकथा गुड़िया भीतर गुड़िया में उन्होंने अपने जीवन को भी दर्शाया है अपने साथ होने वाले शोषण के प्रति विद्रोह का स्वर मुखरित किया है तथा अपनी समस्त कहानी एवं उपन्यासों में नारी को सशक्त रूप में प्रदर्शित किया है चाहे वह पढ़ी-लिखी हो या अनपढ़ हो ।[20]

## विचार-विमर्श

इस शब्दयुग्म से बहुत से लोगों का साहित्यिक जायका कड़वा हो जाता है। अगर ऐसा अनुभव है तो यह कोई विचित्र बात भी नहीं है। सबको अपनी तरह से सोचने का अधिकार है। बात यह भी है कि स्त्री विमर्श के चलते साहित्य में अनेक भ्रांतियां फैली हुई हैं, जैसे- यह विमर्श आखिर किसके हित में है? यह एक पुरुष-विरोधी अभियान है। तीसरी बात कि यह विचार विदेशों से आयातित है, जो भारतीय जीवन-मूल्यों को ध्वस्त कर रहा है। ऊपर की मान्यता प्राप्त बातों का उत्तर न सहज है, न आसान। नहीं बताया जा सकता कि स्त्री विमर्श स्त्री के हित में है और पुरुष वर्ग का अहित करने के लिए लागू हुआ है। मामला यहीं से उलझने लगता है, जब लिखित या व्यावहारिक तौर पर स्त्री पितृसत्ता के सौतेले और कठोर व्यवहारों पर सीधी नहीं, मरखनी गाय की तरह सींग हिलाने लगती है, यानी मुझे तुम्हारा निजाम मंजूर नहीं। हमारा पुरुष समाज देखता है, अरे यह क्या हुआ, त्यागमयी सहिष्णु नारी, सेवाभावी स्त्री, अपने स्वामी के इशारों पर उठने-बैठने और चलने-फिरने वाली औरत और अपनी दसों इंद्रियों को निग्रह के हवाले रखने वाली सती, आज कैसी उल्टी-सीधी बातें करने लगी है![21] मरखनी गाय को पीटने का विधान है, मुंहजोर और जिद्दी औरत की अक्ल ठिकाने लगाने वालों को भी दोषी नहीं माना जाता, क्योंकि औरत की जिद खुद एक अपराध है। जिद भी किन बातों की? उन बातों की, जिन पर पुरुष सत्ता का हुक्मनामा लागू रहा है। पिता, पति और पुत्र इन आज्ञा-पत्रों के मालिक माने गए हैं।

मगर स्त्री विमर्श! यह पुरुष-विरोधी मुहिम नहीं, तो क्या है? वह अपने मनुष्यगत अधिकारों की मांग करती है- वह शिक्षा का अधिकार मांगती है, घर की चौखट लांघने का उच्छृंखल आचरण करती है। वह विवाह में अपना फैसला देना चाहती है, मतलब कि कन्यादान को चुनौती देती है। वह विवाह से भी पहले 'करिअर' बनाने की बात करती है, यानी परंपरा से चले आ रहे उम्र-विधान को टंगड़ी मारती है। वह वंश चलाने के लिए अपनी इच्छा की बात करती है। संतान कब और कितनी, यह सवाल उसका अपना है, क्योंकि यह उसके तन-मन से जुड़ा मुद्दा है। वह कहां जाएगी, कहां नहीं, इसका फैसला भी खुद ही करेगी। किसी के साथ जाएगी या अकेली, वह खुद तय करेगी। क्या पहनेगी, यह भी उसी का अपना चुनाव होगा। यह औरत आजाद है या आवारा? यह भारतीय स्त्री कैसे हो सकती है? यह भारतीय औरत के रूप में विदेशिनी है। यह जो कुछ करना चाहती है, सब आयातित स्त्री विमर्श की देन है। इसे रोका जाना चाहिए। अगर ऐसा हमारे सामाजिक और साहित्यिक लोग मानते हैं तो हम उनको दोषी नहीं ठहरा सकते, क्योंकि व्यवस्था

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

छिन्न भिन्न हो जाने का डर अपनी जगह मामूली नहीं होता। जमींदार की तरह रहे स्त्री के मालिक लोग उसको वे हक कैसे दे सकते हैं, जिन्हें बड़े कौशल से हथिया कर उन्होंने औरत को गुलाम बनाया है। धरती पर धन-दौलत, सोना-चांदी, महल-हवेली जैसी चीजें मिल जाती हैं। मगर गुलाम और दासी तो खुद ही पालने-पोसने पड़ते हैं, पालन भी ऐसा रहे कि वे भागने या छूटने के लिए खुद को अपाहिज समझें। ऐसा होता आया है। इस व्यवस्था का कमाल देखिए कि इसने कितना लंबा जीवन पाया है और आज जब व्यवस्थाओं के लिए खतरा खड़ा होता है कि उनके गुलाम विरोध ही नहीं, विद्रोह पर उतारू हैं, तो उन्होंने अपना निजाम और भी कठोर तथा क्रूर बना दिया है। विदेशों में शिक्षा पाने और कमाने वाले सपूतों के पिताओं का वश चले तो वे स्त्री को भारतीय नियमावली के बमों से उड़ा दें। 'आदर्श बहू' के खंजर तो औरत पर रोज ही चलते हैं। समाज में स्त्री के लिए दरिंदगी का जो सिलसिला चला है, वह इसी डर का परिणाम है कि औरत उनके हाथ से निकल रही है। यहां हम यह कह कर मर्दों को माफी नहीं दे सकते कि वे अनपढ़, अशिक्षित या बेहाल, कंगाल हैं जो औरत पर जुल्म करते हैं। नहीं, उनमें कोई भूखा-नंगा नहीं होता। तुम अपने हक मांगोगी, जिसमें तुम्हारी आजादी होगी कि तुम खुले आसमान के नीचे निकलोगी तो हम तुम्हें रोकेंगे नहीं, तुम्हारा शिकार करेंगे, अपनी ताकत दिखाएंगे। फिर भी अगर तुम हमें पराजित करने की ठानोगी तो हम झुंड बांध कर आएंगे और तुम्हें धराशायी कर देंगे। औरत मर्द के लिए दहशत का विषय बने? धिक्कार है ऐसी मर्दानगी पर![22]

हमारे समाज का ऐसा चेहरा और स्त्रियों की जांबाज मुहिम! मुहिम में रणनीतियों का उपयोग न किया गया हो तो दरिंदगी भरे समाज से, सड़ी-गली परंपराओं की बजबजाती दल-दल से और आजकल शानदार चमकदार तस्वीर दिखाते बाजार से खतरों के उफान उमड़ते ही रहेंगे। क्या स्त्रियों, नवयुवतियों को अपने लिए ऐसे संकल्प नहीं लेने होंगे, जो उनकी मुहिम को मजबूत कर सकें? रूढ़ियों का सड़ांध भरा कीचड़ औरत का रास्ता रोक देता है, इसका उल्लेख हमें आज ही नहीं, पिछली शताब्दी के शुरुआती दौर से ही मिलने लगता है। बात बस गौर करने की है।

साहित्य में महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान से लेकर उनके समय की लेखिकाओं ने अपनी गद्य रचनाओं में उसी आग के दर्शन कराए हैं, जिसे आज हम स्त्री विमर्श के नाम से जानते हैं। उनके भीतर वही विरोध-प्रतिरोध थे, मर्दानी व्यवस्था के प्रति जो आज हमारे हैं। हां, उनके प्रतिकार के ढंग थोड़े भिन्न थे। फिर भी स्त्री नाइंसाफियों के खिलाफ बोल रही थी और पुरुष परंपरा को बाकायदा चुनौती देती है, पुलिस से जूझती है, जेल जाती है, यानी घर की चौखट हर हालत में लांघती है। यही धारा तो बहती चली आई कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी से लेकर मृदुला गर्ग, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, गीतांजलीश्री, अनामिका से और आगे तक। स्त्री की वह छवि साहित्य में अपना होना दर्ज करती गई, जो अपने मनुष्यगत अधिकारों के लिए सजग है और उनको हासिल करने के लिए अग्रसर। स्त्री द्वारा लागू किए गए इस विधान को आप किसी नाम से पुकारिए, जब वरक खोलेंगे तो एक चेतना संपन्न लोकतांत्रिक स्त्री का दर्शन होगा। साहित्य के ऐसे सफे ही सामाजिक स्तर पर अपना असर छोड़ते हैं। पढ़ने वाले के अंतरमन में जीवित रहते हैं, क्योंकि इनका वास्ता पाठक से उसके एकांत में होता है। अगर आप गौर करें तो पाएंगे कि स्त्रियों का ऐसा लेखन, जिसमें वे अपनी नागरिकता का दावा करती हैं। किसी या किन्हीं पुरुषों के विरोध में नहीं है, बस ऐसा लगता है कि क्योंकि हक छीनने वालों से अधिकार वापस लेना उनसे दुश्मनी ठानने जैसा हो जाता है। सही मायने में तो बात यह है कि स्त्रियों को पुरुषों के रूप में शासक नहीं, सहयोगी और साथी चाहिए, यही स्त्री लेखन का मकसद है और होना भी चाहिए।[23] अपने इस मकसद के लिए उन रचनाकारों को भी सचेत होना पड़ेगा, जिनको हम लेखिका कहते हैं। उनको भी आत्मालोचन की जरूरत है। जरूरत है कि जिस मुहिम को हमारी पूर्वज लेखिकाओं ने पूरे साहस के साथ छेड़ा, बिना समझौते और सौदेबाजी के निभाया, उसी मुहिम को हम यहां तक किस रूप में लाए हैं? क्या हमने उस बहादुर लेखन का फलक विस्तृत किया है या उतना ही रहने दिया? या नया भी कुछ जोड़ा है? समाज में स्त्री के लिए फैली हुई नियमों की कुरूपता, सजाओं की सजावट या सजावटों की वीभत्सता को खुली आंखों देखते हुए हमने क्या फैसले किए? इक्कीसवीं सदी में जबसे 'युवा लेखन' का फतवा चला है, लेखन की दुनिया में खासी तेजी आई है। लेखिकाओं की भरी-पूरी जमात हमें आश्वस्त करती है। किताबें और किताबें। लोकार्पण और लोकार्पण। इनाम, खिताब, पुरस्कार जैसा बहुत कुछ। प्रकाशक, संपादक भी अपने-अपने स्टाल लेकर हाजिर। अपने-अपने जलसों की आवृत्तियां। कैसा उत्सवमय समां है। कौन कहता है कि यह दरिंदगी और दहशत भरा समय और समाज है? साहित्य जगत तो यहां आनंदलोक के साथ है। नाच-गाने और डीजे। शानदार पार्टियां और आपसी रिश्तों के जश्न। ऐसा लगता है जैसे कितनी ही कालजयी रचनाएं आई हैं।

मगर इस समय की कलमकार के अपने रूप क्या हैं? युवा के सिवा कुछ भी नहीं, यह युवा लेखिका का फतवा किस दोस्त या दुश्मन ने चलाया कि इस समय की रचनाकार अपनी उम्र का असली सन तक अपने बायोडाटा में दर्ज नहीं करतीं, क्योंकि उम्र जगजाहिर करना युवा लेखन के दायरे से खारिज होना है। वे लेखन के हल्केपन की परवाह नहीं करतीं, जवानी को संजोए रखने की

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

चिंता में हैं। इसी तर्ज पर कि रचना में कमी-बेसी से डर नहीं लगता साब, वयस्क कहे जाने से डर लगता है। परवाह नहीं उम्र पैंतालीस से पचास पर पहुंच जाए, युवा कहलाने का अनिर्वचनीय सुख मिलता रहे।[24] हम बड़े गौर से देखते हैं, कोई रचना मिले जो अपनी गंभीरता के साथ मेच्योर हो, जो देश के सामाजिक हालात से संबंधित राजनीतिक दायरों के अनुभवों पर आधारित हो, जो स्त्री का हस्तक्षेप पंचायतों से लेकर विधानसभा और संसद तक रेखांकित करे। जो धार्मिक और राजनीतिक गठजोड़ का परदाफाश करे। यानी जो 'जिंदगीनामा', 'महाभोज', 'अनित्य', 'हमारा शहर उस बरस', 'आंवा' से आगे का आख्यान बने। नहीं तो इक्कीसवीं सदी का रचनात्मक इतिहास दर्ज कौन करेगा? क्या इसका जिम्मा भी युवा लेखिकाओं ने उन पर ही छोड़ा है, जिन्हें वे बीतती हुई पिछली पीढ़ी मानती हैं। संभव है यह, क्योंकि आज की रचनाओं में लिव इन रिलेशनशिप, अफेयर, मैरिज, डाइवोर्स और कितने-कितने लोगों से यौन सुख का रिफ्रेशमेंट यहां तक कि एग्जाम के लिए भी बायफ्रेंड से यौन सुख की खुराक... उफ यह स्त्री विमर्श! स्त्री का मनुष्य रूप केवल यही है? उसने अपने हक-हकूक केवल इसी स्थिति के लिए लेने चाहे थे?

माना कि श्लील-अश्लील, मर्यादा, नैतिकता और चारित्रिक दृढ़ता के पैमाने औरत को लेकर बदलने की जरूरत थी और वे बदले भी हैं। यौन सुख को स्त्री के दमन का आधार बनाया जाता रहा है, इससे भी औरत ने इनकार किया है। उसके व्यक्तित्व के विकास के लिए जो बाड़ें, बंदिशें थीं, उनको तोड़ा है। नतीजे हमारे सामने हैं कि वह हर कहीं उन क्षेत्रों में है, जिनको अब तक पुरुषों के लिए आरक्षित माना जाता था। यह स्वागतयोग्य कदम है, यह स्त्री विमर्श का चमकदार इलाका है। इस इलाके पर रचनाएं आनी चाहिए।[25]

लेकिन सोचना यह भी पड़ता है कि इस उपलब्धियों के इलाके को धूमिल कौन कर रहा है? हमारी रचनाएं क्यों नहीं कहतीं कि दहेज का विरोध करने वाली दुल्हनों, यह भी कहो कि बाजार की गुलामी नहीं करोगी। शादी का पैकेज बेचते दुकानदार तुमको गुलामी के मंच पर ऐसे वीभत्स श्रृंगार में पेश कर देते हैं, जहां तुम्हारा वजूद बचता ही नहीं। बचती है एक चमकीले सुनहरे जेवरों में मढ़ी और रेशमी कपड़ों के गोटे-पट्टे, सलमा-सितारे जैसे चमकते पत्थरों से जड़े लहंगे ओढ़नी के तंबू में ढंकी युवती, जिसके वास्तविक चेहरे को पहचानना मुश्किल होता है। कमाल है कि साहित्य और समाज में आप अपनी पहचान की बात करती हैं। देखती नहीं, हर चौराहे पर होर्डिंग में स्त्री का अधनंगा और लगभग नंगा शरीर लटका रहता है? कभी इसके खिलाफ भी लेखकीय मुहिम छेड़ो और इसे बाजार की नीतियों से लेकर सरकार के नियमों से जोड़ो। जोड़ो कि आखिर औरत किस कानून के तहत विज्ञापनों में अपनी देह के साथ बिक्री पर चढ़ी हुई है? इन बिकने वाली युवतियों में इनकार का साहस भरो। मत भूलो कि साहित्य में भी तुम्हारे सामने पुरुष वर्ग का वह बड़ा हिस्सा होगा, जो तुम्हारा ध्यान कलम से हटा कर वहीं ले जाएगा, जहां उसकी मस्ती का इलाका है। वह तुम्हें तारीफों का नशा पिलाएगा और मदहोश कर देगा। स्त्री विमर्श जब न तब ऐसे ही तो ढेर होता रहा है। इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य के स्त्री लेखन की पस्तमिजाजी का यही कारण तो नहीं कि औसत रचनाओं का धूम धड़ाका![26] कितना चंचल वक्त है, ऊपर से आपकी उम्र भी युवा युवा! हाथ में कलम है और माहौल जवां जवां! फिर क्या-क्या न लिख दे कोई? बस स्त्री अगर अपनी प्रखरता में शोषितों, वंचितों और छद्म के शिकारों की कथाएं लिखने में लिहाज करती रही तो उन आशिकों और साहित्य के मालिकों की मेहरबानी कि उसकी कलम ने वे तेवर नहीं पकड़े जो 'दिलोदानिश' लिखते। क्या जो लेखिकाएं अपने आप को मुक्ति की मशाल लिए हुए दिखा रही हैं, उस मशाल की लौ धुंआ-धुंआ नहीं है? मशाल तो उनकी ही लौ दे रही है, जिनको आज पिछली पीढ़ी माना जा रहा है, क्योंकि रचनाओं को उम्र की दरकार नहीं होती। भले आप सोलह साल की बनी रहें, रचना तो अपने परिपक्व रूप को ही धारण करने का आग्रह रखती है और उसका नाम भी तभी साहित्य में मुकम्मल रूप से दर्ज होता है। नहीं तो, यों तो फिल्में भी सिनेमाघरों में हर हफ्ते लगती हैं और उतर जाती हैं।

## परिणाम

मैत्रेयी के कथा साहित्य में नारी जीवन में आने वाली विभिन्न संघर्षों को उकेरा है। जो मुख्यतः समाज में महिलाओं पर लिंग भेदभाव पर हो रहे अत्याचार को प्रकाशित करते हैं। मैत्रेयी के एक-एक स्त्री पात्र संघर्ष करते नजर आते हैं। जैसे चाक के सारंग नैनी, इदन्नमम में मंदाकिनी, अल्मा कबूतरी के अल्मा एवं भूरी भाई तो झूलानट का शीलो, विजन में डाॅ. आभा व डाॅ. नेहा, बेतवा बहती रही के उर्वशी, अगनपाखी के भुवनमोहिनी और कही ईसुरी फाग की रजऊ या ऋतु, सरस्वती, मीरा गंगिया बेड़नी या करिश्मा बेड़नी, तो गुनाह-बेगुनाह उपन्यास की सुरिन्दर कौर, रेशमी, शारदा एवं इला चैधरी जैसे अनेक स्त्री पात्र अनेक संघर्षों से जूझती नजर आती हैं। उपर्युक्त सभी उपन्यासों के कथानक या कथावस्तु भले ही अलग-अलग हो परन्तु उस कथानक के स्त्री पात्र पितृसत्ता नियमों के खिलाफ लड़ते नजर आते हैं। इसलिए मैत्रेयी जी स्त्री जीवन को लेकर लिखी गयी उत्कृष्ट कोटी के कथाकार हैं। जिनके साहित्य का केन्द्र बिन्दु स्त्री-विमर्श ही है। मैत्रेयी जी अपने जीवनकाल में अनेक ऐसे घटनाएं देखी हैं या स्वयं उस घटना के शिकार हुए हैं जो उनके कथा-साहित्य में परिलक्षित होती है। अतः मैत्रेयी जी स्त्री विमर्श के यथार्थवादी कथाकार कहलाने के पात्र हैं। इसीलिए मैत्रेयी जी को स्त्री-विमर्श के उत्कृष्ट कोटी की कथाकार कहना अपेक्षित है।

इक्कीसवीं सदी की नारीचेतना आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तनों तथा घटनाओं की उपज है। आज नारी की अस्मिता अ पने उबाल पर है। आज नारी अपने अस्मिता के प्रति सषक्त रूप से चेतनाषील है। नारीचेतना से जन्मे विचारधारा नारी को केवल

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

स्वावलंबी बनने की प्रेरणा नहीं दे रहे हैं, बल्कि प्राचीकाल से जो उसका शोषण और उत्पीड़न होता रहा है, उसके विरुद्ध संघर्ष कर ने की शक्ति प्रदान करते हैं। नारी को जहाँ 'मैं' की चिंता का एहसास है, वहीं से नारी-चेतना की शुरूआत है।[24]नव-
चेतना के विविध आयामों ने नारी-चेतना को शक्ति प्रदान की है। उसने सामाजिक-धार्मिक रीति-
रिवाजों के विरुद्ध केवल आवाज ही बुलंद नहीं की है, बल्कि विरोध भी दर्ज किया है। निश्चय ही इस सदी की नारीचेतना ने सदियों से चली आ रही पुरानी रूढ़िवादी विचारधाराओं एवं मान्यताओं की उपेक्षा करना आरंभ कर दिया है। नारी अब इन रूढ़िवादी बा ह्याडंबरों के बंधन से मुक्त हो रही है। ''21वीं सदी की नारीचेतना उसके अस्तित्व को जहाँ बल प्रदान करती है, वहीं उसकी अस्मि ता को एक पहचान भी देती है।''[1] आज नारी के चेतना में सकारात्मक बदलाव दिखाई दे रहे हैं, चाहे वह ग्रामीण नारी हो या शहरी । जमाने के साथ उन्होंने अपने जीवन को बदलना उचित समझा, जो उनकी चेतनाशीलता का परिचायक है।

नारियों में चेतना-शक्ति का विकास होना जिससे वे अपने भले-बुरे का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। ''वास्तव में नारी-
चेतना गहरे रूप में नारी-
अस्मिता का बोध कराती है। नारी को अपनी पहचान बनाने की प्रेरणा देती है। नारी अपना अस्तित्व बनाए रखने हेतु कड़ा संघर्ष क रती है। चेतना नारी को अपना अंतः और बाह्य चीजों व घटनाओं को समझने की प्रेरणा देती है। अपने हित व अहित के प्रति उसे जा गरूक व चेतनाशील बनाती है।''2 नारी की यही चेतना-शक्ति मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'इदन्नमम' में दिखाई देता है।[25]
मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में ग्राम्य-
परिवेश में नारी को केंद्र में रखा है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों में नारी को अपने हक व अधिकार के प्रति सशक्त रूप से मजबूती के साथ चित्रित किया है। आज की नारी सोचती है कि हमारे सा मने क्या समस्या है ? वह क्या चाहती है ? आज की नारी सोचती है कि अब सहानुभूति के आधार पर नहीं अपनी लड़ाई वह स्वयं अ पने हिम्मत व साहस से लड़ेगी। मैत्रेयी पुष्पा की नारी अपने अधिकारों को पाने के लिए जागृत हो गई है, उसमें चेतना का भाव जागृ त हो गया है।
मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास 'इदन्नमम' में विंध्य अंचल में बसे गाँवों- श्यामली और सोनपुरा के लोक-
जीवन को बड़े ही आत्मीय लगाव के साथ चित्रित किया है। इन गाँवों में धूल है, फूल है, नदी, पहाड़ और जंगल-झाड़ियाँ हैं, सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय है, रूढ़ियों और लोक-परंपराओं में जीवन-
यापन करने वाले लोग हैं। 21वीं सदी की देहरी पर खड़े ये गाँव अब भी पिछड़े हैं, किंतु अब विकास और नई चेतना की चमक भी आने लगी है।
उपन्यास के केंद्र में तीन नारी-पात्रों की जीवन-
गाथा है। बऊ (दादी), प्रेम (माँ) और मंदाकिनी (मंदा) इन तीनों नारी के चरित्रों के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा ने तीन-
तीन पीढ़ियों की कथा कही है। तीनों नारियों की अपनी-अपनी ज़िंदगी है। अपने-अपने जीवन आदर्श हैं। तीनों की कहानी साथ-साथ समांतर चलती है। अन्य नारी-
पात्रों में कुसुमा भाभी का उल्लेख भी जरूरी है, क्योंकि कुसुमा भी अपना जीवन अपने ढंग से, अपनी अस्मिता, स्वयं की निर्णय-शक्ति और संघर्षशीलता का परिचय देती है। इस प्रकार इन नारी-
पात्रों के माध्यम से एक समांतर नारीसंसार का परिचय हमें मिलता है। एक ऐसे संसार का जहाँ पर आधुनिकता, कूटनीतिक, राजनै तिक, कलाबाजारियों और बड़बोलेपन की बात किए बिना भी नारी को ठोस और यथार्थ जीवनसंघर्ष का परिचय व साक्षात्कार होता है, बल्कि 'इदन्नमम' उपन्यास की नारियाँ भारतीय समाज शायद सबसे बड़े नारीसमुदाय की सशक्त प्रवक्ता बनकर उभरती हैं, जो एक बहुत बड़े हिस्से क प्रतिनिधित्व है।[12]

'इदन्नमम' उपन्यास की पहली पीढ़ी बऊ (दादी) है, जो अपने जीवन मेंे अपने तरीके से संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। बऊ (दादी ) जवानी में ही विधवा हो जाती है, किंतु वह अपने जीवन में किसी भी को अपनी तरफ ऊँगली उठाने का मौका नहीं देती और वह अपने इकलौते बेटे महेन्द्र सिंह को पाल-
पोस कर बड़ा करती है, लेकिन महेन्द्र सिंह का अचानक देहांत होने से बऊ और बहू प्रेम, पोती मंदा को कुछ समय के लिए अकेले होने का एहसास होता है, किंतु फिर वे संघर्ष करते हुए आगे बढ़ जाती हैं। महेन्द्र सिंह के देहांत होने के कुछ दिनों बाद प्रेम (माँ), अपने जीजा रतन यादव के साथ भाग जाती है, तब बऊ (दादी) और अकेली हो जाती है। बऊ मंदा पोती का पालनपोषण करती है। प्रेम (माँ) के भाग जाने के बाद बेटी मंदा और जमीनजायदाद को भी अपने नाम करना चाहती है, लेकिन बऊ ऐसा नहीं होने देती है, वह मंदा को भूमिखोरों व लूटेरों से बचने के लिए दूसरे गाँव श्यामली पंचम सिंह के पास चली जाती है। बऊ बहू प्रेम के घर छोड़ कर चले जाने पर मंदा से कहती है-
'बिन्नू, वे जमाने तो सतियों के थे। कायदा से तो सती हो जाने चाहिए थे, पर हमारी राह में महेन्द्र की किलकारी आ गई। वेदपुराण में भी यही बताया गया है कि बालबच्चे को माता की सही पाछें हैं, माता पहले और फिर ससुर की, अपने पति की वंषबेल की चिंता। सो बिटिया, उमर का हंींसा, देह के तकाजे जरा डारे जई देहरी के होम कुंड में।''3 बऊ (दादी) समाज एवं परिवार में वंषपरंपरा

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

को आगे बढ़ने के लिए किसी दूसरे पुरुष के साथ विवाह नहीं की, न ही सती हुई। इस तरह बऊ (दादी) अपने नारी-जीवन के प्रति सषक्त रूप से जागृत दिखाई देती है।[22]

बऊ (दादी) मंदा के हक व अधिकार के प्रति जागृत दिखाई देती है। मंदा की माँ प्रेम अपने प्रेमी रतन यादव के बहकावे में आकर सम स्त संपŸिा को हड़पने के लिए बऊ (दादी) के खिलाफ अदालत में मुकदमा दायर करती है, तो बऊ अपनी हिम्मत और हौसला नहीं हारती। बऊ (दादी) अदालत में चीफ साहब से कहती है-
चीफ तुम फिकिर जिन करो। लड़ने दो उस कंजरी को.... जब तक इस काया में पिरान है, लड़ेंगे हम भी। पूरी जिंदगानी हमने लड़ा ई लड़ी है। हँसी बेल नहीं है जिमिंदारिन बने रहना।''[4] बऊ बूढ़ी नारी होकर भी वह मंदा की माँ प्रेम के खिलाफ लड़ने की हिम्मत व साहस मन में रखती है। बऊ, मंदा का जमीन-जायदाद उसके हक के लिए सुरक्षित रखने के प्रति चेतनाषील दिखाई देती है।
मंदा की माँ प्रेम समाज एवं परिवार की नज़र में कुलटा है, लेकिन वह भी अपनी लड़ाई खुद लड़ती हुई मंदा को गाँव की बदहाली, गरी बी, सामंती और पूँजीवादी वर्ग के साथ आदिवासियों का प्रत्यक्ष परिचय कराती है।प्रेम (माँ) बचपन में मंदा को छोड़कर अपने जी जा रतन यादव के साथ भाग जाती है, लेकिन बाद में प्रेम (माँ) बेटी मंदा के पास गाँव सोनपुरा अपना पश्चाताप करने आती है, लेकि न बऊ (दादी) प्रेम को घर में घुसने नहीं देती है। फिर मंदा को वापस अस्पताल में ठहराने के लिए ले जाती है। प्रेम अपने किए पर शर्मिंदा है, वह रतन यादव के व्यवहार से भी घृणा करने लगती है। प्रेम अपने मन की बात मंदा से कहती है
''रतनसिंह से हमारा वास्ता नहीं रहा। हेलमेल उसी दिन टूट गया, जब उसने हमारी जमीन बिकवा दी। हमें कैसे-कैसे मजबूर किया था, वह कथा तो रहने दो बिन्नू ! और बहुतेरे दुःख हैं कहने-सुनने को।''[5]

प्रेम (माँ) अपने साथ हुए शोषण, अत्याचार से संघर्ष करते हुए आगे बढ़ती है और सषक्त रूप से जागरूक दिखाई देती है। प्रेम कहती है''खेती का पूरापूरा पइसा हड़प रहे थे। हमने कहा, चाहे पिरान कढ़ जाएँ यह अमानत न देंगे किसी तरह। सोनपुरा की धरती हमा री बिटिया की बिरासत है, उसके पिता की जायदाद थी। मंदा का हक बनता है उस पर, छूने नहीं देंगे किसी को।''[6] इस तरह प्रेम अपने ऊपर हुए शोषण व अत्याचार के खिलाफ संघर्ष करती हुई मंदा के हक व अधिकार के प्रति जागरूक नारी के रूप में दिखा ई देती है।'इदन्नमम' उपन्यास में तुलसी राउताईन का जागृत रूप दिखाई देता है। जब क्रैषर मालिक अभिलाख सिंह और काम क रने वाले मजदूरों के बीच मेहनत व हक के लिए झगड़ा होता है, तो उसी बीच तुलसिन दहाड़ मारती हुई कहती है''अपनी बेटी और बहन का बदला न काढ़ा तो राउतिन रहीं। खूान पीऊँगी आज अभिलाख की छाती का। हरामी जगेसर का ! जान लेकर छोड़ूँगी ।''[7] तुलसिन राउतिन अपने ऊपर हुए शोषण, अत्याचार का बदला लेने के लिए साहस व हिम्मत रखती है।[17]

'इदन्नमम' उपन्यास में नैतिकता एवं नारीविषयक मान्यताएँ कुसुमा भाभी के माध्यम से व्यक्त होती है। आत्मनिर्णय और नए विचारधा रा से निर्मित यह नारी का चरित्र नव नारी-
चेतना का प्रतीक मालूम पड़ता है। कुसुमा को पति यषपाल त्यागकर दूसरी शादी कर लेता है, तो कुसुमा भी अविवाहित चाचा ससु र दाऊजू, अमरसिंह की ओर आकर्षित होकर जाती है। दोनों एक-
दूसरे को प्रेम करने लगते हैं और उससे उत्पन्न संतान पर गर्व भी करती है। कुसुमा यह सब कुछ उसी परिवार में पति की आँख के सामने रह कर करती है।[14] परिवार में सास और अन्य लोगों के द्वारा विरोध करने पर कुसुमा सास को करारा जवाब देती हुई कहती है''आगिन साच्छी करके ही आए थे तुम्हारे पूत के संग। सात भाँवरे फिरकें ! लिहाज रखा उसने ? निभाया संबंध ? दूसरी बिठा दी हारी छाती पर ! उसी दिन से कोई संबंध, कोई नाता नहीं रह हमारा। जो ब्याकर लाया था उससे ही कोई ताल्लुक नहीं तो इस घर में हमारा कौर ससुर और कौन जेठ ?''[8]

इस तरह कुसुमा अपने वैवाहिक बंधनों को नकारते हुए अपने चाचा ससुर दाऊजू से संबंध बनाकर अपना स्वतंत्र जीवन जीती है, लेकि न कुसुमा की सास व पति उसके संबंधों को देखकर और क्रोधित हो जाते हैं और उसके प्रेमसंबंध को पाप कहते हैं। जो उसके पेट में पल रहे गर्भ को किसी दूसरे का कुकर्म बताते हैं, जो उसे दाऊजू का नाम लेती है, पति यषपाल की यह बात सुनकर कुसुमा लाज-
लिहाज को त्यागकर चींघाड़ मारती हुई कहती है''ओ न कीलें ! खैर मना कि बच्चा दाऊजू का है। नही ंतो यह किसी भी का होता, जात का आन जात का। गैल चलते आदमी का। तुम होते कौन हो हमारी नाकेबंदी करने वाले ? तुम्हें क्या हक.... कुŸाा की जा त नहीं गिनते हम तुम्हें।''[9] कुसुमा अपने प्रेम-
संबंध को पाप नहीं मानती है, अगर उसके उस संबंध को कोई पाप कहे तो उसे सहन नहीं होता, इसलिए वह अपने पति यषपाल को क्रोधित होकर उसे कह देती है कि यह बच्चा ते दाऊजू का है। अगर अन्य जाति-
बिरादरी का भी होता तो भी मैं जन्म देती। इस तरह काम-संबंधों को लेकर दाऊजू के साथ कुसुमा का संबंध बहुत बड़ा कदम है।[16]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

कुसुमा अपने ऊपर हो रहे शोषण व अन्याय के खिलाफ उठकर मुकाबला करती हुई अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति सषक्त रूप से जागृत होकर अपनी बात बऊ से कहती है- ''बऊ, उसी बाबत थूक दिया हमने भीख-दान किसी और को देना। महनत-मजूरी करेंगे पर कुँवर को उस अन्यायी के खाते नहीं डालेंगे।''10 कुसुमा अपने अस्मिता के प्रति सचेत दिखाई देती है। वह मेहनत मजदूरी कर लेगी, परंतु अपने बेटे कुँवर के प्रति अन्यास व गलत नहीं होने देगी। कुसुमा अपने अस्तित्व के प्रति सजग व जागृत नारी के रूप में दिखाई देती है। जिस तरह कुसुमा अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति जागरूक है, वैसे ही वह अपने हक व अधिकार के लिए जागृत होती है। कुसुमा दादा के जमीन-जायदाद के वितरण के प्रष्न पर समान हिस्सा लेने की बात कहती है-
''मंदा, दादा की जंग का हम पूरा-
पूरा हिस्सा लेंगे। अपने नाम लिख लिया समूचा का समूचा।'' इस तरह कुसुमा दादा की सभी जमीन-
जायदाद में अपना हिस्सा लेने की बात कहती हुई अपनी चेतनाषीलता का परिचय देती है। इस प्रकार कुसुमा भाभी का व्यक्तित्व परिवार व समाज की परिभाषा में सामान्य और गौण होते हुए भी साहित्यिक से महत्वपूर्ण है।[18]

'इदन्नमम' उपन्यास की मुख्य चरित्र मंदा है। मंदा अपनी दादी की नजर में बाबरी सिर्रिन है, तो शोषकों का प्रतिनिधित्व अभिलाख उसे 'कालभैरवी' कहता है। सरकारी तंत्र के लोग 'महाकाली' का संबोधन करते हैं, महाराज उसे 'रानी लक्ष्मीबाई' की तरह हौसले वाली मानते हैं और मोदिन जैसी ग्रामीण नारी के विचारों में उसका मन 'दरपन सा साफ' है। इस तरह मंदाकिनी (मंदा) के चरित्र में गाँव से होकर शहर की कड़ी तक जोड़ने के लिए अनेक पहलू आकर जुड़ते जाते हैं। जेसे वह समाज-
सेविका बनकर शोषण व अत्याचार के विरूद्ध लोगों को जागरूक कर खड़ी होती है। धार्मिक संस्कारों को मानने वाली बनकर गाँवगाँव रामायण का कथा कहने जाती है और अंत में आकर राजनैतिक विचारधारा से जुड़कर गाँवों के साथ-साथ आस-
पास के ग्रामीण-
जनों को राजनीति (वोट) के प्रति जागरूक करती है। मैत्रेयी पुष्पा ने समय को पहचान कर मंदा को उसी ओर ले जाना उचित समझा।[21]मंदा गाँव वालों को क्रैषर मालिक अभिलाख सिंह के शोषण व अत्याचार के प्रति गरीब मजदूर को अन्याय के प्रति लड़ने के लिए तैयार करते हुए कहती है- ''जागो रे जागो ! चेतो रे चेतो ! छोटे-बड़े, नन्हे-मुन्ने, बूढ़े-पुराने, नए-जवानों के अलावा ढोर-चोंपे, परेवा-पंछी, नदी-ताल, पेड़-रूख, हवा-पानी यहाँ तक कि दसों दिषाओं को जगाना होगा, बचने-
बचाने को जूझना होगा।''[11] मंदा इस तरह पूरे गाँव में नई जनजागृति लाकर लोगों को शोषण व अन्याय के प्रति सचेत कर स्वयं चेतनाषील बनती है।

मंदा नारी होने के नाते दूसरी नारी के साथ न्याय चाहती है। मंदा रूढ़िवादी विचारधारा को खत्म करना चाहती है, जिसके चलते नारी के लिए अलग से नियम का निर्धारण है तथा अगर वही गुनाह पुरुष करे तो उसके लिए कोई मापदंड नहीं। इसी रूढ़िवादी परंपरागत विचारधारा को लेकर मंदा विरोध करती हुई अपनी माँ के साथ हुए दुव्र्यवहार के प्रति
चाहती हुई बऊ (दादी) से इन रूढ़िवादी बाह्याडंबरों व रीति-
रिवाजों को आँख मूँद कर अपनाने की बात बऊ से कहती है''सो हम कहत हैं बऊ, पुरानी परंपराओं की जो थोथी और दुखदायिनी नीति है, उसकी अंधभक्ति न करो।''[12] मंदा दादी को यह बात समझाते हुए कहती है कि पुरानी परंपरा की आँख बंद करके उस पर विष्वास मत करो। जो नारी-
जीवन के लिए कष्ट व पीड़ादायक है, जिसमें नारी ही पीड़ित होती है। इस तरह मंदा धार्मिक रूढ़िवादी परंपरा पर सोच-समझ कर उसे अपनाना चाहती है।
आगे मंदा गाँव के लोगों के साथ-
साथ आसपास के गाँव के लोगों को राजनैतिक विचारधारा के प्रति जागरूक कर उसे अपने वोट के प्रति सजग करती हुई दिखाई देती है। जब राजा साहब वोट माँगने के लिए गाँव में आते हैं और खासकर वे मंदा को चुनाव में वोट देने की बात करते हैं, तब मंदा राजा साहब से कहती है-
''सो हिसाब किताब सीख गए हैं ग्रामवासी। गणित लगा रहे हैं गंवई लोग। ऐसा नहीं कि कुछ भी न मिलता हो। हर वोटर को उसके वोट की कीमत धरते हैं आपके कार्यकर्ता। दो सौ, तीन सौ, चार सौ और पाँच सौ तक में निपटा लेते हैं सौदा, परंतु चुनाव की अवधि तो बहुत लंबी होती ह! पाँच साल तक की दवा-
दारू, इलाजउपचार के लिए काफी नहीं रहते चार सौ, पाँच सौ।''[13] इस तरह मंदा राजा साहब को अपने वोट के महत्व के प्रति लोगों में जनचेतना की बात को सजगता के साथ कहती है कि अब गाँव के लोग समझदार हो गए हैं और अब की बार निर्णय कर लिए है, सो ग्रामीण लोगों के निर्णय की बात को मंदा राजा साहब से कहती है''सो क्या करें ? अबकी बार ठान लिया है कि हम 'कहे' की नहीं करे की परतीत करेंगे और अगर नही तो ऐन खाली उठा ले जावें पेटी आपके आदमी। वोट नहीं पड़ेगा एक भी! कहकर मंदाकिनी हल्के से मुस्कुरा दी और भीतर चली गई।''[14] इस बार मंदा कृत संकल्प होकर दृढ़ निष्चय के साथ ठान लेती है कि अब वे झूठे प्रलोभन पर विष्वास नहीं करेगी। गाँव का कोई भी व्यक्ति राजा साहब को वोट नहीं देगा। मंदा के कुषल मार्गदर्षन व नेतृत्व

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

में गाँव वाले चुनाव का बहिष्कार करते हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में मंदा के माध्यम से अपने इसी विष्वास को आधार देने का प्रयास किया है।

मैत्रेयी पुष्पा ने सोनपुरा गाँव के बहाने पूरे बुंदेलखंड की करुण-
कथा इस उपन्यास में सुनाई है। आज पूरा बुंदेलखंड गिट्टी के क्रेषरों की धड़धड़ाहट से काँप रहा है, उसकी धूल से लोगों की जीवन षक्ति और खेतों की उर्वरकषक्ति नष्ट हो रही है। गाँव के शोषित व पीड़ित लोग असंगठित और अषिक्षित हैं, उन्हें राजा साहब जैसे पूर्ण सामंत और अभिलाख जैसे गुंडे-
व्यापारी, ठेकेदार मिलकर शोषण कर रहे हैं। जरूरत की अहम सुविधाओं से ग्रामीण मोहताज हैं। जिस आत्मविष्वास और बारीकी से मैत्रेयी पुष्पा ने इस कथानक की शुरूआत, विकास और चरमोत्कर्ष किया, वह तारीफ के योग्य है। मुँहजुबानी और सैद्धांतिक क्रांति से दूर रहकर इस उपन्यास 'इदन्नमम' के नारी-
पात्र व्यावहारिक रूप से क्रांति में जुटते हैं, चाहे उन्हें हानि ही क्यों न उठानी पड़ रही हो। बऊ (दादी), प्रेम (माँ) और मंदा तीन पीढ़ियों के नारी के साथसाथ कुसुमा भाभी भी अपने जीवन में सघर्ष करती हुई अपने पूरे हिम्मत व साहस के साथ उपन्यास में प्रकट होती है और समाज में फैले हुए सर्वत्र रूढ़िवादी रीतिरिवाजों, परंपराओं के प्रति जागृत होकर ग्रामीण जनजीवन को उसके हक व अधिकार के प्रति जागरूक करती हुई स्वयं चेतनाषील दिखाई देती है।[26]

## निष्कर्ष

उपन्यास-स्मृति दंश (१९९०),बेतवा बहती रही (१९९३),इदन्नमम (१९९४),चाक (१९९७),झूला नट (१९९९),अल्मा कबूतरी,कहै ईसुरी फाग,चिन्हार,गुनाह बेगुनाह

आत्मकथा-कस्तूरी कुण्डल बसै(२००३),गुड़िया भीतर गुड़िया(२००८)

कहानी संग्रह-चिन्हार,ललमनियाँ तथा अन्य कहानियां,त्रिया हठ,फैसला,सिस्टर,सेंध,अब फूल नहीं खिलते,बोझ,पगला गई है भागवती,छाँह,तुम किसकी हो बिन्नी?

कविता संग्रह-लकीरें

यात्रा संस्मरण-अगनपाखी

लेख संग्रह-खुली खिड़कियां

## संदर्भ

1) स्मिता नायर -मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य का अनुशीलन पृष्ठ -123
2) स्मिता नायर मैत्रेयी- पुष्पा का कथा साहित्य एक अनुशीलन पृष्ठ -66
3) मैत्रेयी पुष्पा- कस्तूरी कुंडल बसै पृष्ठ -13
4) मैत्रेयी पुष्पा -चाक पृष्ठ- 19,20
5) स्मिता नायर -मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य एक अनुशीलन पृष्ठ- 120
6) मैत्रेयी पुष्पा -आंगन पाखी पृष्ठ -77
7) स्मिता नायर -मैत्रयी के कथा साहित्य में नारी शोषण और शोषण के विरुद्ध विद्रोह पृष्ठ- 123
8) मैत्रेयी पुष्पा- फैसला ललमनिया पृष्ठ -8
9) स्मिता नायर- मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य एक अनुशीलन पृष्ठ- 99
10) मैत्रेयी पुष्पा- इदन्नमम पृष्ठ- 199
11) स्मिता नायर -मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य एक अनुशीलन पृष्ठ -14

12) सिंह, बी.एन. एवं जनमेजय सिंह. नारीवाद. दिल्ली: रावत पब्लिकेषन, 2003, पृ. 396.
13) सिंह, बी.एन. एवं जनमेजय सिंह. नारीवाद. दिल्ली: रावत पब्लिकेषन, 2003, पृ. 184.
14) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 307.
15) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 77.
16) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 312.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

17) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 312.
18) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 329.
19) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 166.
20) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 141.
21) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 284.
22) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 301.
23) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 224.
24) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 309.
25) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 353.
26) पुष्पा, मैत्रेयी. इदन्नमम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाषन, 2009, पृ. 354.